परमेश्वर ने अपनी प्रजा इस्राएल को भली व्यवस्था दी

प्रार्थना: हे प्रभु, बच्चों की सहायता कीजिये कि वे समझ सकें कि आपने जो पुरानी व्यवस्था अपनी प्रजा को दी वह इसलिये दी कि वे कुछ उत्तम आशीषें पाने की तैयारी कर सकें।

ऐसी गतिविधियों का चयन कीजिये जो बच्चों की आयु के अनुकूल हों व उनकी आवश्यकता पूर्ति कर सकें।

मूसा ने दस आज्ञाएं प्राप्त कीं। कोई समझदार बच्चा या शिक्षक आज्ञाएं पढ़कर सुनाए या बताए कि किस प्रकार मूसा ने इस्राएल को दस आज्ञाएं दीं।

बताएं कि किस प्रकार परमेश्वर ने आज्ञाएं प्राप्ती के लिये लोगों को तैयार किया। (निर्ग० 19:9-13)

बताएं कि सीनै पर्वत पर परमेश्वर ने क्या किया । (निर्ग० 19:16-25)

संक्षेप में दस आज्ञाओं का उल्लेख करें। (निर्गमन 20:1-21)

बच्चे दस आज्ञाओं के चित्र की नकल बना सकते हैं, और बड़े बच्चे आज्ञाएं लिख सकते हैं।

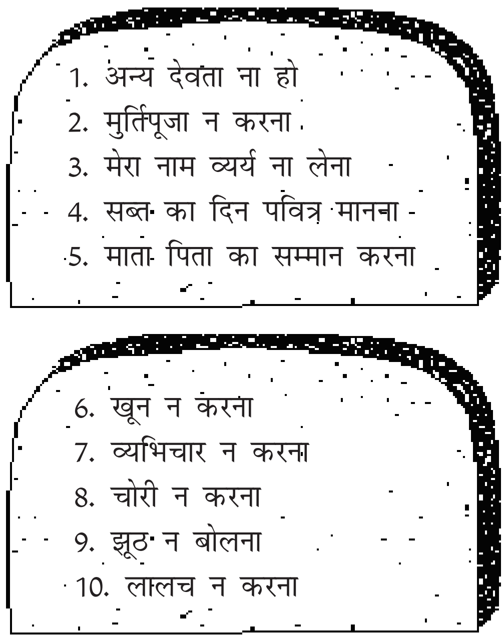

1. **निम्नलिखित प्रश्न पूछें : (हर प्रश्न के आगे उत्तर दिए गये हैं)**

- जब लोग परमेश्वर से भेंट करने पर्वत पर गये तो वह कैसा दिखाई दे रहा था? (निर्ग 19:18)
- यदि लोग पर्वत छू लेते तो क्या होता? (निर्ग 19:24)
- जब लोगों ने पर्वत को धूएं से भरा हुआ देखा तो कैसा अनुभव किया? (निर्ग० 20:18)
- कौन सी दस आज्ञाएं परमेश्वर ने मूसा को दीं। जितनी याद हों, बच्चे बताएं।

2. **गलतियों 5:18 को समझाएं। "यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के अधीन न रहे।"**

- चूंकि यीशु मरे और मृतकों में से पुन: जीवित हुए और हमारे जीवन में निवास करने के लिये अपना पवित्रात्मा भेजा, इसलिये हम पुरानी वाचा के प्राचीन नियमों के अधीन न रहे। रोमियों 6:14 हमें निश्चय दिलाता है कि हम व्यवस्था के अधीन नहीं बल्कि अनुग्रह के अधीन हैं।
- प्रभु यीशु ने इस्राएल को दी गई पुरानी व्यवस्था को पूरा कर दिया है। (मत्ती 5:17)

- हमने पुरानी व्यवस्था का पालन करने से उद्धार नहीं पाया है, परन्तु अनुग्रह से पाया है जो उसके पवित्रात्मा का दान है जिसने हमें नया बनाने के द्वारा हमारा उद्धार किया है। (इफिसियों 2:8-10)।

- नई वाचा के अन्तर्गत हम भय के साथ नहीं, परन्तु प्रेम के साथ प्रभु यीशु की आज्ञाओं का पालन करते हैं। यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"(यूहन्ना 14:15)

  यीशु ने बहुतेरी आज्ञाएं दी हैं। हम उन आज्ञाओं का सारांश निम्नलिखित सात बातों में दे सकते हैं जिन्हें प्रारम्भिक कलीसिया के शिष्य माना करते थे (प्रेरितों के काम 2:37-47) :

  1. प्रश्चाताप करो, विश्वास करो तथा पवित्रात्मा से भर जाओ
  2. बपतिस्मा लो
  3. प्रेम और क्षमा
  4. प्रभु-भोज मनाओ
  5. प्रार्थना करो
  6. दान दो
  7. चेले बनाओ

3. **मूसा की कहानी और दस आज्ञाओं पर आधारित नाटक कीजिये**

   आराधना सभा में भी यह नाटक प्रस्तुत करने की व्यवस्था कीजिये। अपने शिक्षण के समय बच्चों को ये पांच भूमिकाएं करने की तैयारी कीजिये : 1-उद्घोषक, जो बच्चों को स्मरण करता रहे कि उन्हें क्या बोलना व करना है, और कहानी का सारांश बता सके। 2-परमेश्वर की आवाज़, 3-मूसा, 4-पौलुस, 5-इस्राएली (छोटे बच्चे)।

उद्घोषक: नया राष्ट्र इस्राएल, अनगिनित लोग, मरूस्थल में बिना विधि-विधान के भटक रहे थे। परमेश्वर ने उन्हें तैयार किया कि वे उसके पवित्र नियम (व्यवस्था) प्राप्त करें। अब सुनिए कि उसने उनके अगुवे मूसा से क्या कहा:

परमेश्वर की आवाज़: निर्गमन 19:9-15 स्पष्ट तथा ज़ोर से पढ़ें।

उद्घोषक: तब इस्राएली पुरूषों ने ऐसा कहा :

इस्राएली: चिल्लाते हुए, देखो पहाड़ पर धुआं उठ रहा है। देखो बिजली चमक रही है। बादल की गर्जन से मुझे भय लग रहा है। हम परमेश्वर के निकट नहीं जा सकते, नहीं तो मर जाएंगे।

उद्घोषक: पहले निर्गमन 19:16-20 पढ़ें फिर कहे, अब सुनें कि परमेश्वर ने मूसा से क्या कहा -

परमेश्वर: निर्गमन 19:21 में लिखित परमेश्वर के वचन उंचे स्वर में पढ़ें।

उद्घोषक: समझाएं कि परमेश्वर ने मूसा को पर्वत पर बुलाया ताकि वह उसे दस आज्ञाएं दे सके। तब कहें कि, अब सुनें कि पर्वत पर मूसा से क्या कहा गया :

मूसा: कुर्सी पर खड़े होकर कहिए, हम इन नियमों का पालन करेंगे ताकि आशीष पा सकें

उद्घोषक: गलातियों 5:18 में लिखा है,"यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के अधीन न रहे"। अब सुनें कि संत पौलुस ने नई वाचा स्थापित हो जाने के अनेकों वर्ष बाद क्या कहा –

पौलुस: यीशु हमारे लिये मरा ताकि हम उद्धार पा सकें, हम व्यवस्था के अधीन नहीं हैं, हम यीशु से प्रेम रखते हैं इस कारण उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं।

इस्राएली: चिल्लाते हैं, तब तो हम परमेश्वर नियम तोड़ सकते हैं। हम अब तो जो चाहे कर सकते हैं, आओ हम और अधिक पाप करें ताकि परमेश्वर और अधिक प्रेम दिखा सके, और अधिक क्षमा कर सके।

पौलुस: नहीं नहीं नहीं, परमेश्वर पवित्र है, हम प्रभु यीशु से अपने प्रेम के कारण आज्ञापालन करते हैं उसने आज्ञा दी है कि हम परमेश्वर से तथा आपस में प्रेम रखें। उसका पवित्रात्मा हमारे हृदयों में प्रेम उत्पन्न करता है, यदि हम प्रेम रखेंगे तो हत्या नहीं करेंगे, न ही चोरी करेंगे, न मूर्तिपूजा करेंगे। हम वही करेंगे जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है।

इस्राएली : फिर चिल्लाते हैं, क्या परमेश्वर पर्वत पर धुएं और बिजली की गर्जन के साथ प्रकट होगा? वह बहुत दूर है, बहुत पवित्र है, हम उसके निकट नहीं जा सकते, हमें उससे बातें करते समय डर लगेगा।

पौलुस: नहीं नहीं, नई वाचा में परमेश्वर हम से दूर नहीं चला गया है, वह हमारे अन्दर रहता है, हम उससे ऐसे बात कर सकते हैं जैसे अपने पिता से बात कर रहे हों, अब हमें उससे भय खाने की आवश्यकता नहीं।

उद्घोषक: जब नाटक समाप्त हो जाए तो बच्चों का धन्यवाद दे। उनसे पूछे कि यदि उनके पास कोई प्रश्न हो तो युवाओं से पूछें। (भाग-2 के प्रश्न तैयार रखने को कहना चाहिये)।

विचार-विमर्श: बच्चों से पूछें, "पुराने नियमों व जिस नये नियम को आजकल हम मानते हैं, यीशु की आज्ञापालन करते हैं, इन दोनों नियमों में क्या अन्तर है? (बच्चों को उदाहरण देने को कहिये)।

चित्र बनाना: धुआं निकलता पर्वत बनाएं व बच्चों को धुएं के पर्वत के चित्र की नकल बनाने को कहें। बच्चे आराधना के समय वह चित्र युवा बच्चों को दिखाएं व बताएं कि यह चित्र परमेश्वर की पवित्रता को दिखाता है।

मत्ती 7:12 कंठस्थ कीजिये।

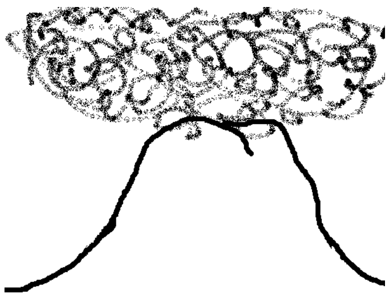

कविता: भजन संहिता 19:7,10 व 11 से कम से कम तीन बच्चे पढ़कर सुनाएं।

प्रार्थना: हे परमेश्वर, आप पवित्र हैं, इसलिये आप हमारे पापों से घृणा करते हैं, आपने हमारे पाप हम पर इसलिये प्रकट किये, ताकि हम उनसे पश्चात्ताप करें और प्रभु यीशु में विश्वास करके, क्षमा प्राप्त कर सकें, आपका धन्यवाद हो। हम व्यवस्था के दबाब के कारण आपकी आज्ञाओं का पालन करना नहीं चाहते हैं पर इसलिये कि हम आपसे प्रेम करते हैं।